B.A. PART – 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय – पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य) भाग-1
आधुनिक काल

Ajanta
Date

प्रश्न :– आधुनिक काल (पद्य) की प्रवृत्तियों को बताये ?

उत्तर :– भारतेन्दु के आगमन से हिन्दी कविता में एक युगान्तर उपस्थित होता है। उनसे पूर्व हिन्दी में रीतिकालीन काव्य-धारा प्रवाहित हो रही थी। इस काव्य-धारा में शृंगार की प्रधानता, लक्षण-ग्रन्थों का निर्माण तथा आश्रयदाताओं को रिझाने का प्रयास प्रमुख प्रवृत्तियाँ थीं। यह कविता विलास के भार से दबी हुई थी और इसमें जीवन की विविधता का अभाव था। सन् 1857 के उपरान्त मुगल साम्राज्य के वैभव के ह्रास के साथ इस विलास-प्रधान कविता की भी समाप्ति-सी हो गई। सन् 1857 का स्वाधीनता आन्दोलन देश में एक नई चेतना उत्पन्न करने में समर्थ हुआ। अँग्रेजी शासन और शिक्षा के प्रचार से छुटकारा पाने के लिए भारतवासियों ने कमर ली। जीवन के साथ कविता में भी परिवर्तन हुआ। फलतः नई कविता पुरानी काव्य-रूढ़ियों को तोड़कर स्वच्छन्द रूप से बहने लगी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक युग के सर्वप्रथम कवि के रूप में आते हैं।

आधुनिक युग को निम्नलिखित पाँच भागों में बाँटा जा सकता है —

(क) भारतेन्दु युग (1857 – 1900 ई०)
(ख) द्विवेदी युग (1900 – 1920 ई०)
(ग) छायावादी युग (1920 – 1935 ई०)
(घ) प्रगतिवादी युग (1935 – 1943 ई०)
(ङ) प्रयोगवादी युग या नई कविता (1943 से आज तक)

(क) भारतेन्दु युग :–

भारतेन्दु युग आधुनिक कविता का प्रवेश-द्वार है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कविता को रीतिकालीन दरबारी तथा शृंगार-प्रधान वातावरण से निकाल कर उसका जनता से नाता जोड़ा। इस युग के मुख्य कवि थे – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह आदि। भारतेन्दु-युग की कविता में प्राचीन और आधुनिक काव्य-प्रवृत्तियों का समन्वय मिलता है। इसमें भक्तिकालीन भक्ति-भावना और रीतिकालीन शृंगार-भावना के साथ-साथ राष्ट्रीयता, हास्य और व्यंग्य, सामाजिक जागरण, प्रकृति-चित्रण आदि आधुनिक काव्य-प्रवृत्तियों के भी दर्शन होते हैं। इस युग की कविता का महत्व इस बात में है कि इसमें देश और जनता की भावनाओं और समस्याओं को पहली बार अभिव्यक्ति मिली है। इस काल के कवि ने देश की सामाजिक, ~~धार्मिक~~ आर्थिक और राजनीतिक दशा के करुण चित्र प्रस्तुत किए हैं। समाज-सुधार का स्वर इनमें प्रबल है। भारतेन्दु और इनके युग के कवियों ने अतीत के सांस्कृतिक गौरव का चित्र प्रस्तुत करके लोगों में आत्म-सम्मान की भावना भरने का प्रयत्न किया। इस युग का काव्य अपने युग की समस्याओं और आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति है। इस युग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा थी।

(शेष बचा है।)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 09.02.2023
मो० नं० - 7909046087